Volume: 3 Issue: 4 Pages: 46-47

वेदों में वर्णित सांस्कृतिक तत्त्वों की विवेचनात्मक समीक्षा।

[*1] शोपतसिंह

[*1] सहायक प्रोफ़ेसर, संस्कृत साहित्य, राजकीय महाविद्यालय, सिद्धमुख चूरू, राजस्थान भारत।

Article Info.
E-ISSN: 2583-6528
Impact Factor (SJIF): 5.231
Peer Reviewed Journal
Available online:
www.alladvancejournal.com

Received: 17/March/2024
Accepted: 00/April/2024

***Corresponding Author**
शोपतसिंह
सहायक प्रोफ़ेसर, संस्कृत साहित्य, राजकीय महाविद्यालय, सिद्धमुख चूरू, राजस्थान भारत।

सारांश:
वैदिक संस्कृति की भावना ही मानव को शुभ आचरण करने का उपदेश देती हैं। वैदिक संस्कृति में विश्वबन्धुत्व की भावना की अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। इसी आधार पर "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना परवर्ती काल से पल्लवित हुई। वैदिक संस्कृति विश्व को सद्मार्ग अपनाने का उपदेश देती है। वैदिक संस्कृति के आधार बिना जीवन व्यर्थ है। इस बौद्धिक एवं कर्म संघर्षरत युग में मानव की अशान्ति का मूल कारण आत्मविश्वास की उपेक्षा ही है। वैदिक कालीन सामाजिक स्थिति उन्नत दशा में थी । वैदिक संस्कृति का तत्व एक पुनर्जन्मवाद है। यह पारलौकिक भावना ही मानव को शुभ आचरण करने का उपदेश देती हैं। मानव सदाचार आदि का पालन करता हुआ अगले जीवन को सुखद बनाने की चेष्टा करता है। वेद सांस्कृतिक जीवन की समग्र समझ के लिए मार्गदर्शन करते रहते हैं, उनकी कालजयी शिक्षाऐं प्रासंगिक बनी हुई हैं, जो ज्ञान, आध्यात्मिकता और सामंजस्यपूर्ण अस्तित्व की खोज के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करता है।

मुख्य शब्द: वैदिक साहित्य, सांस्कृतिक, मण्डल, प्रासंगिकता, वस्तुवाद, भौतिक जीवन

प्रस्तावना

प्राचीन भारतीय संस्कृति,सभ्यता,धार्मिक मान्यताओं,रीति-रिवाजों आदि को जानने के एकमात्र स्रोत हैं। वेद धर्म के स्तम्भ हैं। साहित्य के रूप में सम्पूर्ण वेद-वाक्य महत्त्वपूर्ण हैं, आवश्यकता के अनुसार खेद का साहित्य बढ़ता गया और ब्राह्मण,आरण्यक तथा उपनिषद साहित्य क्रमश: विकसित हुए। प्राचीनकाल से लेकर आजतक वेद-वेदांग वांग्मय सम्पूर्ण विश्व को विविध उपदेश देता रहा हैं इसलिये इसके महत्व को अंकित करना प्रासंगिक है । भारतीय साहित्य में वेदों का महत्तव है । ऋग्वेद में आर्यो की एक लम्बी वौद्धिक परम्परा प्राप्त होती है। इस परम्परा में धार्मिक, सामाजिक और दार्शनिक विषयों का भी निरूपण हुआ है। वैदिक भाषा के बिना भारोपीय भाषाओं का अध्ययन सम्भव नहीं है। वेदों के उपदेश सार्वकालिक और सार्वभौमिक हैं ।

ऋग्वेद में वर्णित सांस्कृतिक तत्त्व

ऋग्वेद में आर्यों की एक लम्बी बौद्धिक परम्परा प्राप्त होती है । इस परम्परा में धार्मिक, सामाजिक और दार्शनिक विषयों का भी निरूपण हुआ है। ऋग्वेद में दस मण्डल है । इन्हीं मण्डलों का दशम मण्डलों में आर्य के दार्शनिक और अलौकिक विचार व्यक्त हुए है। सम्पूर्ण मण्डलों में ऋचाएं सबसे पुरानी मानी जाती हैं । भारत की प्राचीनतम संस्कृति के विकास के ज्ञान के लिए ऋग्वेद का अनुशीलन अपेक्षित है। धार्मिक दृष्टि से रचित सूक्तों की संख्या इस संहिता में अवश्य ही सर्वाधिक है। ऋग्वेद के सूक्तों में प्रमुख रूप से इन्द्र और अग्नि देवता की प्रार्थना है। अन्य देवताओं में सविता, रुद्र, मित्र, वरुण, सूर्य, मरुतू आदि के अतिरिक्त उषा देवी भी हैं। यही नहीं, मन्यु (क्रोध) के रूप में अमूर्त देवता की भी प्रार्थना की गई है।

ऋग्वेद संहिता में लौकिक विषयों पर भी ऋषियों की दृष्टि पड़ी है। इसमें द्यूत-क्रीड़ा के दोष, मण्डूकों की ध्वनि, विवाह की विधि, दान की महिमा इत्यादि विषयों का भी उल्लेख है। इससे प्रतीत होता है कि ऋषियों ने धर्म और दर्शन की विवेचना में तल्लीन होकर लौकिक विषयों की उपेक्षा नहीं की थी। उषा के सूक्तों में वैदिक ऋषियों की ललित भावना भी दृष्टिगत होती है। ये सूक्त परवर्ती गीतिकाव्य के स्रोत समझे जाते हैं।

भारतकी प्राचीनतम संस्कृति के विकास के ज्ञान के लिये ऋग्वेद का अनुशीलन अपेक्षित है। ऋग्वेद संहिता में लौकिक विषयों पर भी ऋषियों की दृष्टि पड़ी हैं। इसमें धुत्त क्रीड़ा के दाप, माण्डकों की ध्वनि, विवाह की विधि, दान की महिमा इत्यादि विषयों का भी उल्लेख है। इससे प्रतीत होता है कि ऋषियों ने धर्म और दर्शन की

विवेचना से तल्लीन होकर लौकिक विषयों की उपेक्षा नहीं की थी । उपर्युक्त सूक्तों में वैदिक ऋषियों की ललित भावना भी दृष्टिगत होती है । ये सुक्त परवर्ती गीतिकाव्य के स्रोत समझे जाते हैं । पुरुष सुक्तों में सृष्टि की प्रक्रिया का प्रतिपादन है । तो नासदीय सूक्त में सृष्टि की रहस्यमयता का भी संकेत है ।

इसप्रकार ऋग्वेद में गूढ दार्शनिक विचारों को भी महत्त्व दिया गया था। ऋग्वेद में बहुत से संवाद-सूक्त भी है. जिन्हें कुछ लोग नाटकों का प्रारम्भिक रूप भी कहते है । इन सूक्तों में पुरुरवा-उर्वशी तथा यम-यमी के संवाद सामान्य लोकजीवन के भावों को व्यक्त करत हैं । इन संवादों में प्रेम, हास्य, करूणा एवं वीरता जैसे मानवीय भावों का भी चित्रण हुआ है।

यजुर्वेद में वर्णित सांस्कृतिक तत्व

यजुर्वेद अनुष्ठान-विषयक संहिता है। यज्ञ में अध्वर्य के द्वारा प्रयुक्त मन्त्रों का इसमें संग्रह है। जिनमें विविध यज्ञों से सम्बद्ध मन्त्र संकलित हैं। इन यज्ञों में दर्शपूर्णमास, अग्निहोत्र, चातुर्मास, सोमयाग, वाजपेय, राजसूय, सौत्रामणि, अधमेघ आदि प्रमुख हैं। इसके सोलहबें अध्याय को रुद्राध्याय कहते हैं, जिसमें रुद्र के विविध रूपों को नमस्कार किया गया है। चौंतीसवें अध्याय में शिवसंकल्प की प्रार्थना है। पैंतीसवे अध्याय में पितरों की प्रार्थना की गई है। अन्तिम अध्याय दार्शनिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इसमें ईधर को संसार का नियामक कहा गया है। यही अध्याय कुछ परिवर्तनों के साथ ईशावास्योपनिषद् के रूप में आया है। यजुर्वेद में बहुत सुन्दर प्रार्थना-मन्त्र हैं, जैसे -

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव बयुनानि बिद्वान्। अर्थात, हे अग्निदेव! धन-प्राप्ति के लिए आप हमें सन्मार्ग पर ले चलें। हे देव, आप हमारे (अच्छे-बुरे) सभी कार्यों को जानते हैं। यजुर्वेद में कुछ मन्त्र पद्यात्मक और कुछ गद्यात्मक हैं। यजुर्वेद में कर्मकाण्ड सामिल होने के कारण यजुर्वेद अन्य सभी वेदों की अपेक्षा लोकप्रिय है। इसलिए वेदों के अधिकांश भाष्यकार यजुर्वेद पर व्याख्या लिखना अपना पहला कर्तव्य समझते है। यजुर्वेद में कुछ मन्त्र पद्यात्मक और कुछ मन्त्र गद्यात्मक है। कर्मकाण्ड में उपयोगी होने के कारण यजुर्वेद अन्य सभी वेदों की अपक्षा लोकप्रिय है ।

सामवेद में वर्णित सांस्कृतिक तत्व

प्राचीन ग्रन्थों की सूचना के आधर पर सामवेद के मंत्रों का प्रयोग यज्ञ में देवताओं के आह्वान के लिए उचित स्वर के साथ विद्वता द्वारा किया जाता था। इसलिए साम-मन्त्रों का पाठ नहीं, अपितु गान होता है। सामवेद छन्दोबद्ध है तथा 75 मन्त्रों को छोड़कर शेष मन्त्र ऋग्वेद में भी उपलब्ध होते हैं। सामवेद के मन्त्रों के गान में लय तथा स्वर का विशेष विधान है। सामवेद में ग्राम गेय (स्वर-विशेष) गानों की संख्या सर्वाधिक है। आरण्य गान में संकटपूर्ण और वर्जित रागों को संकलित किया जाता प्रा। इसलिए ये ग्रामों में नहीं गाए जाते थे। इन दोनों से सम्बद्ध क्रमश: ऊहगान और ऊह्यगान हैं, जो यज्ञकार्यों में साम-मन्त्रों को क्रमबद्धता प्रदान करते हैं। सामवेद के रागों का विकास धार्मिक तथा सांस्कृतिक दोनों प्रकार के गीतों ने हुआ। सोम गान की अनेक विधियों में (जो सामवेद के ब्राह्मण-ग्रन्थों में विहित हैं) अब कुछ ही शेष हैं।

सामवेद का महत्त्व संगीत की दृष्टि से बहुत अधिक है। इससे भारतीय संगीत का उद्धव हुआ।

अथर्ववेद में वर्णित सांस्कृतिक तत्व

अथर्ववेद हिन्दू धर्म के चार मुख्य वेदों में से एक है और इसका महत्वपूर्ण स्थान है। अथर्ववेद को ऋग्वेद के बाद की वेदांत अवस्था माना जाता है। इसमें मन्त्रों के साथ विभिन्न प्रायोगिक उपयोग, उपचार, सुरक्षा और संपदा के लिए प्रार्थनाएं, व्याधि निवारण, वशीकरण और प्रभावशाली मंत्र आदि दिए गए हैं।

अथर्ववेद का अर्थ होता है "अथर्ववेद के वेद"। अथर्ववेद एक ब्राह्मण कुल का ऋषि था, जिन्होंने इस वेद के मंत्रों को ग्रहण किया था। इसमें मनुष्य के जीवन के विभिन्न पहलुओं, उपचारों, अद्भुत शक्तियों और विशेष आयामों का वर्णन किया गया है।

अथर्ववेद का महत्वपूर्ण कार्य उपचार, रक्षा, स्वास्थ्य, शांति, भय निवारण, सुख-शांति, समृद्धि और शारीरिक-मानसिक रोगों के निदान के लिए मंत्रों का उपयोग करना है। यह वेद लोगों को शक्ति, उर्जा, सुख, समृद्धि, सुरक्षा और प्राचीन सामर्थ्यों का अनुभव कराता है।

उपसंहार

भारतीय संस्कृति में वेदों का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा गौरवमय है। सृष्टि की उत्पत्ति के समय धार्मिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक ज्ञान के लिए, वेदों का प्रादुर्भाव हुआ है। वेदों में लोकजीवन के भावों की अभिव्यक्ति हुई है। इनमें प्रेम,हास्य,करुणा एवं वीरता तथा मानवीय भावों का भी चित्रण हुआ है। यजुर्वेद दार्शनिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है क्यांकि इसमें ईश्वर को संसार का नियामक कहा गया है। सामवेद का महत्व संगीत की दृष्टि से बहुत अधिक है। इससे भारतीय संगीत का उद्धव हुआ है। अत: भारतीय संस्कृति में वेदों का स्थान अत्यन्त गौरवमय है। तथा वेदों में वर्णित सांस्कृतिक तत्व की महत्त्व अपरिहार्य है ।

सन्दर्भ सूची

1. वैदिक साहित्य क इतिहास, डॉ राममुर्ती शर्मा, प्रकाशक: ईस्टर्न बुक लिंक्स, दिल्ली।
2. वैदिक साहित्य का इतिहास. गणेश दीक्षित. प्रकाशक: शारदा मन्दिर. काशी ।
3. ऋग्वेद का हिन्दी संस्करण, डॉ गंगा सहाय शर्मा. संस्कृत साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली
4. यजुर्वेद का हिन्दी संस्करण, डॉ रेखा व्यास, संस्कृत साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली
5. सामवेद का हिन्दी संस्करण, डॉ रेखा व्यास, संस्कृत साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली
6. वेद का परिचय. प्रथम भाग, पं. श्रीपाद दामोदर सातवन्तक, संस्कृत साहित्य प्रकाशन,
7. वेदत्रयी का परिचय, पं. माधव शास्त्री, प्रकाशक: माधव विद्या भवन, दिल्ली ।
8. वैदिक संकलन (द्वितीय खण्ड), अध्यापक डॉ. भवानी प्रसाद भट्टाचार्य और तारकनाथ अधिकारी, संस्कृत बुक डिपो ।
9. वैदिक साहित्य और संस्कृति, डॉ कपिलदेव द्विवेदी, संस्कृत साहित्य प्रकाशन ।